बात का सफ़र

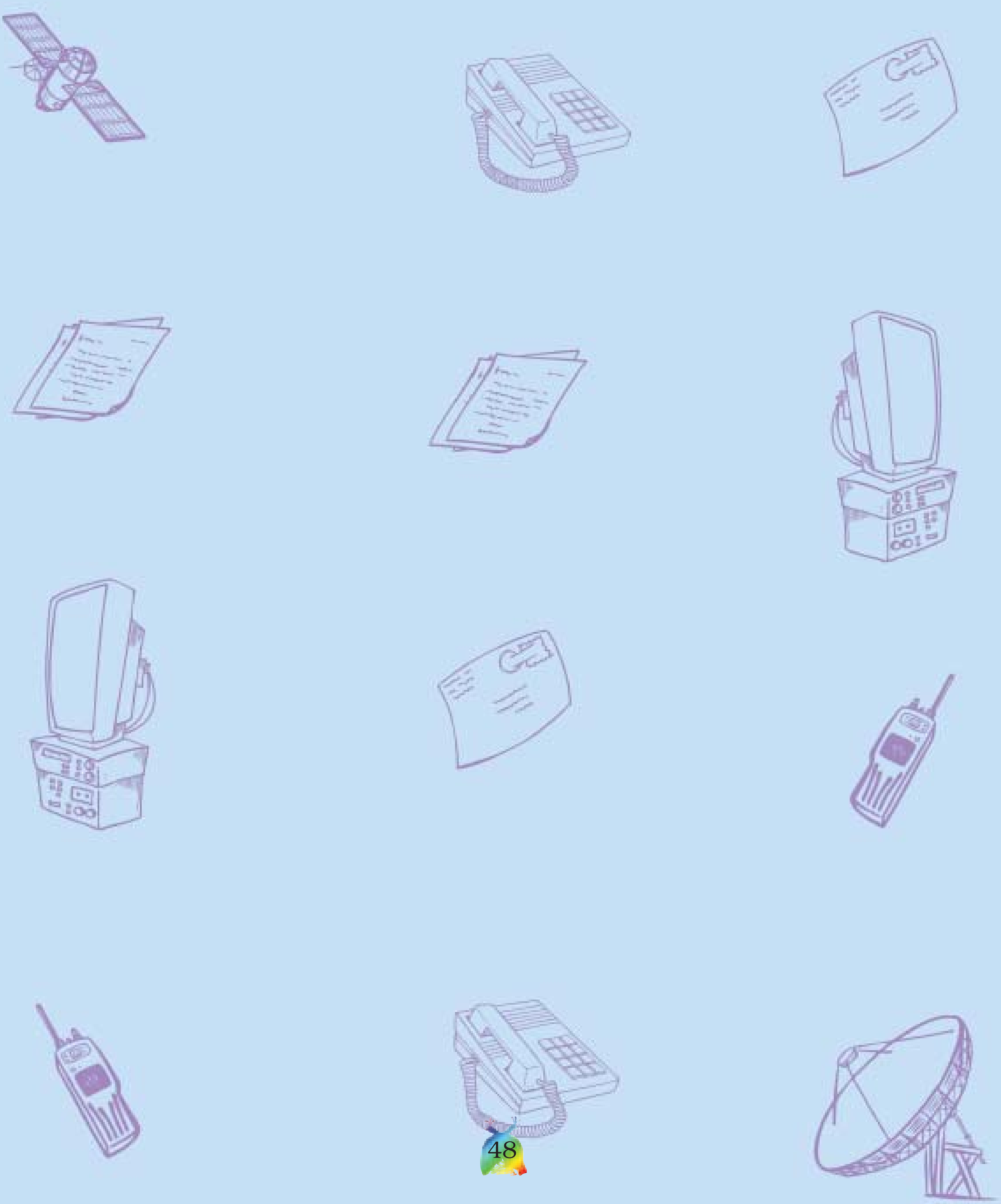

बात का सफ़र

वैब कैमरा, कम्यूनीकेटर, कबूतर, इंटरनैट, पोस्ट-कार्ड, हरकारा, संकेत भाषा, कूरियर, टैक्स्ट मैसेज, तार... इस लंबी सूची में और क्या जोड़ा जा सकता है? इन सभी में क्या समानता है?

सड़कों के चौराहे पर खड़ा ट्रैफ़िक पुलिस का आदमी क्या करता है? कत्थक, भरतनाट्यम जैसे शास्त्रीय नृत्य की भाव-भंगिमाएँ क्या अभिव्यक्त करती हैं? या फिर एक क्लास में जहाँ टीचर पढ़ाने में मशगूल हो, दो बच्चे आँखों के इशारे से, होठों को हिलाकर या किसी कागज़ के टुकड़े पर कुछ लिखकर क्या कर रहे होंगे? ऐसा तो हर किसी के साथ ज़रूर होता होगा। अपनी बात कहने की ज़रूरत तो सभी को होती है। तरीका भले ही बदल जाए।

रिमझिम के इस भाग में बात है बीते कल की और ऐसे भविष्य की जो बच्चों को रोमांचित करे। **वे दिन भी क्या दिन थे** विज्ञान कथा के प्रसिद्ध लेखक आइज़क ऐसीमोव की लिखी कहानी है। यह कहानी आज से डेढ़ सौ साल बाद के स्कूलों की कल्पना करती है। कहानी पढ़कर शायद इन स्कूलों को कोई स्कूल ही न कहना चाहे। कल्पना है ऐसे भविष्य की जहाँ स्कूल में कोई शिक्षक न हो और विद्यार्थी एक ही हो। ऐसे स्कूल में बच्चे सीखेंगे किससे, बातें किससे करेंगे, खेलेंगे किसके साथ?

हम जो पत्र लिखते हैं, उसके जवाब का भी इंतज़ार करते हैं। पत्र को ले जाने वाला और उसका जवाब लाने वाला है डाकिया। **डाकिए की कहानी, कुँवरसिंह की ज़ुबानी** एक भेंटवार्ता है। रिमझिम की श्रृंखला में पहली बार भेंटवार्ता की विधा आ रही है। इसमें बच्चे देखेंगे कि किस तरह से ऐसे प्रश्न पूछे गए हैं जिनसे ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी हासिल हो सके और व्यक्ति को अपने विचारों और अनुभवों को खुलकर अभिव्यक्त करने का मौका मिले। कुँवरसिंह जो पहाड़ी इलाके में डाक बाँटने का काम करते हैं, अपने

काम, निजी ज़िंदगी और काम में पेश आने वाली दिक्कतों के बारे में बात करते हैं। डाक के ज़रिए संदेश पहुँचाने का काम थका देने वाला ही नहीं, जोखिम भरा भी हो सकता है।

चिट्ठी का सफ़र एक ऐसे सफ़र पर ले जाएगा जो अतीत और वर्तमान के संदेशवाहकों की झलकियाँ देगा। संदेश पहुँचाने की ज़रूरत इंसानों को हमेशा से रही है। आज डाक का क्षेत्र बेहद फैला हुआ है। समय के साथ यह तकनीकी भी हो गया है। कुछ दशकों पहले तक संदेश कुछ दिनों में पहुँचता था और आज पलक झपकते ही अपनी बात हम सैकड़ों मील दूर तक पहुँचा सकते हैं। अपनी बात किसी तक पहुँचाने का तरीका समय के साथ बदलता रहा है। समय के साथ संप्रेषण और संचार के माध्यमों में बदलाव आया है। इन माध्यमों का इस्तेमाल अलग-अलग उद्देश्यों के लिए, समाज के विभिन्न वर्गों के लिए हुआ है।

एक माँ की बेबसी– मन को छू लेने वाली कविता है। कविता पाठक को किस तरह से प्रभावित करती है यह पाठक के अनुभव पर निर्भर करेगा। यह कविता एक ऐसे बच्चे के बारे में है जो बोल नहीं सकता। गली-मोहल्ले के बच्चों के लिए वह 'अजूबा' था। बातचीत के ज़रिए हम दूसरों को समझ और जान पाते हैं। संवाद न होने से वह दूसरा हमारे लिए अनजाना बना रहता है। पर मौखिक बातचीत के अलावा भी दूसरों के भावों को समझने के कई तरीके हो सकते हैं।